आखर हिंदी पत्रिका e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 3/सितंबर 2022
Received: 22/09/2022; Accepted: 23/09/2022; Published: 24/09/2022

लेख

राष्ट्रीय आंदोलन और जनोपयोगी हिंदी पत्रकारिता

- डॉ मधुशील आयिल्यत्त

डॉ. मधुशील आयिल्यत्त, राष्ट्रीय आंदोलन और जनोपयोगी हिंदी पत्रकारिता, आखर हिंदी पत्रिका, खंड2/अंक 3/सितंबर 2022,(237-240)

हमारे देश के स्वतंत्रता आंदोलन को जन आंदोलन के रूप में परिवर्तित करने में पत्रकारिता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। देश के अधिकतर लोगों द्वारा समझी जाने वाली भाषा होने के कारण इस दिशा में हिंदी पत्रकारिता को विशेष योगदान देने का मौका प्राप्त हुआ। हिंदी पत्रकारिता ने स्वतंत्रता पूर्व काल में अपनी विधाओं एवं शैली के जरिए राष्ट्रवाद को एक नया आयाम प्रदान किया। राजनीतिक, शैक्षणिक, आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक विकास के परिणामस्वरूप हमारे देश में उक्त अवधि के दौरान जो राष्ट्रवाद उदित हुआ उसे सही एवं उचित आकार देने का दायित्व पत्रकार, बुद्धिजीवी और राजनीतिज्ञों के कंधों पर था। उस जमाने के पत्रकार विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से अंग्रेज़ शासन के दमन की नीति और अमानवीय व्यवहारों के विरुद्ध लिखते रहे और जनता को जागरूक करने में उन्हें पर्याप्त सफलता भी प्राप्त हुई। इस दौरान हिंदी साहित्य और हिंदी पत्रकारिता साथ-साथ चले और तत्कालीन परिस्थिति में हिंदी के अधिकतर रचनाकार संपादक या पत्रकार हुआ करते थे। वे राजनीतिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य को परखने में माहिर थे और वे उसे जनोपयोगी ढंग में पत्रिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत करने में सक्षम भी थे। उन्हें पता था कि जनता की भाषा में जनता से बात करने के लिए पत्रकारिता सर्वश्रेष्ठ माध्यम है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए भारत में जो राष्ट्रीय आंदोलन हुआ वह संसार की एक अनोखी घटना है। इसे अनोखा बनाने की प्रक्रिया में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं ने विशेष प्रयास किए हैं। आरंभ में प्रकाशित उदंत मार्तंड, बनारस अखबार, सुधाकर और प्रजा हितैषी जैसे पत्र-पत्रिकाओं ने इसके लिए मार्ग प्रशस्त किया। सन 1868 ई में भारतेंदु हरिश्चन्द्र जी द्वारा 'कविवचन सुधा' का प्रकाशन आरंभ किया गया और उन्होंने अपनी पत्रिका के माध्यम से भारतीयों को जागरण तथा राष्ट्रीयता का संदेश दिया।

भारतेंदु हरिश्चंद्र जी और अजीमुल्लाह खान जी

सन 1857 ई में अजीमुल्लाह खान जी के संपादन में 'पायामे आज़ादी' नामक समाचार पत्र प्रकाशित हुआ जो भारतीय चेतना के विकास की गवाही है। इसमें कोई शक नहीं है कि भारतेंदु युग में प्रकाशित प्रत्येक पत्र-पत्रिकाओं में एक राष्ट्रीय मिशन का भाव निहित है। उस समय हिंदीतर भाषी लेखकों और विद्वानों ने भी हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। हम यह देख सकते हैं कि आरंभ में प्रकाशित अधिकतर पत्रिकाएं बहुभाषी थे। लेकिन भारतेंदु युग में हिंदी की स्वतंत्र पत्रकारिता विकसित होती दिखाई देती है। हिंदी भाषा के रूप को स्थिर और परिमार्जित करने तथा देश के जागरण और सुधार तथा राष्ट्रीय भावनाओं के प्रचार प्रसार में भारतेंदु जी के समय प्रकाशित हिंदी पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भाषा में युक्त एक विशेष निखार एवं लालित्य, परिमार्जित और प्रभावी भाषा शैली इस युग के पत्रिकाओं की सफलता के पीछे का प्रमुख राज़ है।

इसके पश्चात आने वाले द्विवेदी युग में एक ओर भाषा की अराजकता और व्याकरण की समस्या दूर करने के लिए कई सार्थक प्रयास हुए। सांस्कृतिक नवोत्थान के इस महत्वपूर्ण कार्य को 'सरस्वती' नामक साहित्यिक पत्रिका के माध्यम से आचार्य महावीर महावीर प्रसाद द्विवेदी

जी ने किया। दूसरी तरफ अंग्रेज़ों के बंगाल विभाजन जैसे कपटपूर्ण नीतियों के विरुद्ध पत्र-पत्रिकाओं ने हर संभव कार्य किया। जहां तक स्वतंत्रता से जुड़े क्रांतिकारी आंदोलन का संबंध है, भारत में यह आंदोलन बंदूक और बम के साथ नहीं, समाचारपत्रों के माध्यम से शुरू हुआ था। इन पत्र-पत्रिकाओं में हिंदी समेत विभिन भारतीय भाषाओं में प्रकाशित 'युगांतर' का विशेष स्थान है। 'युगांतर' समाचारपत्र जब बंद हो गया तो उसी के कार्यकर्ताओं ने एक क्रांतिकारी दल संगठित किया, जो बाद में 'युगांतर' गुट के नाम से प्रसिद्ध हुआ। सन 1908 ई. में इस पत्र की प्रसार संख्या करीब आठ हज़ार प्रतियां थी। 'समाचार पत्रों द्वारा अपराध भड़काने' संबंधी कानून के अंतर्गत इसे बंद कर दिया गया तो तत्कालीन अंग्रेज़ चीफ जस्टिस सर लारेंस जैकिनसन ने इस पत्र के बारे में लिखा था कि ''इनकी हर एक पंक्ति में अंग्रेजों के प्रति विद्वेष टपकता है। हर एक शब्द से क्रांति के लिए उत्तेजना झलकती है। रौलेट रिपोर्ट में भी, जो दस साल बाद लिखी गयी थी, 'युगांतर' के संदर्भ में बहुत से उद्धरण मिलते हैं, जिससे यह साबित होता है कि कि किस तरह इस पत्र ने गुलामी के विरुद्ध विद्वेष भड़काया और लोगों को क्रांति के लिए उकसाया था। जब अमरीका में 'गदर पार्टी की स्थापना' हुई तो लाला हरदयाल जी ने सान फ्रांसिस्को में पार्टी के कार्यालय स्थल का नाम 'युगांतर आश्रम' रखा था। इससे यह संकेत मिलता है कि 'युगांतर' पत्रिका से सृजित चिंगारी कितनी प्रभावी थी।

भारत के बाहर से प्रकाशित 'गदर' जैसे पत्र भी अपने आप में क्रांति का बड़ा दूत था। यह एक वर्ष में ही हिन्दी, उर्दू, पंजाबी, गुजराती, मराठी और अंग्रेजी में निकलने लगा और कुल मिलाकर इसकी लाखों प्रतियां छपती थीं और भारत से बाहर जहां-जहां भी भारतीय थे, उनको यह भेजी जाती थी। यही नहीं उन्हें भारत भी बड़ी चतुराई से भेजा जाता था। रौलेट कमेटी की रिपोर्ट में इस पत्र का भी विभिन्न स्थानों पर उल्लेख मिलता है और उस समय यदि किसी के पास यह पत्र पाया जाता है तो उन्हें तुरंत कठोर सजा होती थी।

सन 1920 ई. के आस-पास गांधी जी ने भारतीय राजनीति के नेतृत्व को ग्रहण किया था। समयानुकूल आवश्यकता को समझकर राजनीतिक पत्रकारिता को प्रभावी बनाते हुए गांधी जी ने इस क्षेत्र को एक नई दिशा दी। गांधी जी के विचारों की सबसे बड़ी शक्ति उनकी प्रेषणीयता थी। उनका यह गुण उनकी पत्रकार प्रवृत्ति का उदाहरण था। हिंदी पत्रकारिता की दृष्टि से देखा जाए तो यह काल महान साहित्यकार एवं पत्रकार प्रमचंद का समय है।

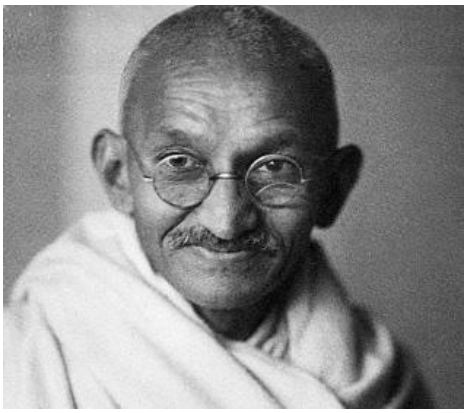

गांधी जी एवं मुंशी प्रेमचंद

राष्ट्रीय चेतना से युक्त सामग्रियों का प्रकाशन प्रेमचन्द युगीन पत्रिकाओं की विशेषता है और यह समय राजनीतिक क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन का समय रहा है। विशेष रूप से असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा आन्दोलन आदि का संदेश शहरों तक सीमित न करते हुए उसे देश के कोने-कोने तक पहुंचाने के लिए प्रेमचंद कालीन हिंदी पत्रकारों ने बहुत ही श्रमसाध्य प्रयास किया है। इस काल में राष्ट्रीय आंदोलन को बढ़ावा मिला तथा हिंदी पत्रिकाओं को अपेक्षित सम्मान और महत्व प्राप्त हुआ।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौर की पत्रकारिता न सिर्फ हमें गहरे सरोकारों से जोड़ती है, बल्कि उस कर्तव्य पथ की भी याद दिलाती है, जिसे हम बिसरा चुके हैं। उस समय प्रकाशित हिंदी समाचार पत्रों के प्रकाशक और संपादक इस बात से अवगत रहते थे कि वे अंग्रेज़ों के तोपों का मुकाबला कर रहे हैं और जुर्माना, संपत्ति की जब्ती, जेल की सजा, काला पानी, मृत्यु दंड, परिवार को सरकार द्वारा निरंतर प्रताड़ित करते रहने की स्थिति आदि उत्पन्न हो सकते हैं। लेकिन हिंदी के पत्रकार किसी भी स्थिति से निपटने के लिए सदैव तैयार रहते थे। सच्चाई तो यह है कि उस समय हिंदी पत्रकारिता का कार्य कांटों की नहीं बल्कि शूलों की सेज से कम नहीं था।

****